International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
www.newresearchjournal.com/academic
Volume 1; Issue 1; January 2016; Page No. 42-44

भारतीय योगदर्शन में कैवल्य स्वरूपः एक विवेचन

डॉ. अमित शर्मा
संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में योगदर्शन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्यवहारिक एवं क्रियात्मक होने के कारण योगरूपी दार्शनिक विचारधारा को निर्विवाद रूप से सभी विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया है। अन्य भारतीय दर्शनों की भाँति साधना के रूप में प्रयुक्त होने वाले योग का विकास आध्यात्मिक चिन्तन के रूप में हुआ। समय के साथ–साथ योग को कैवल्य प्राप्ति के नित्य साधन के रूप में देखा जाने लगा। अब प्रश्न यह है कि कैवल्य क्या है? इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है? योगदर्शन में कैवल्य प्राप्ति के इन सभी प्रश्नों का समाधान किया गया है।

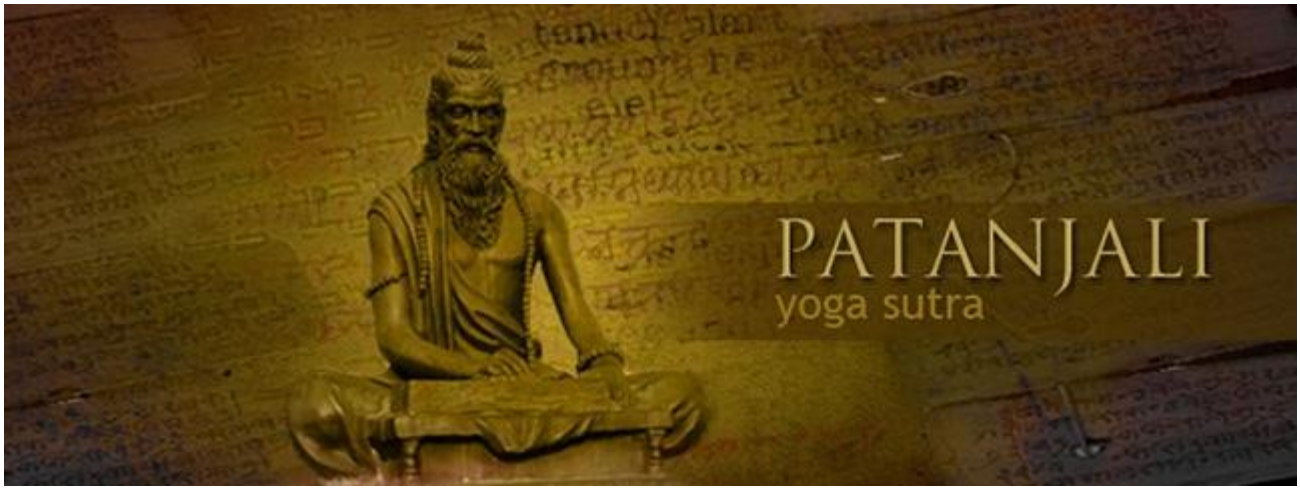

कैवल्य स्वरूप

कैवल्य शब्द का अर्थ है केवलता, अकेलापन, पूर्णपृथक्ता अथवा एकान्तिकता।[1] 'कैवल्यस्य भावः कैवल्यम्'। अर्थात पुरुष की केवलता अथवा एकान्किता ही कैवल्य है। अन्य दर्शनों में कैवल्य को मोक्ष, मुक्ति, परमधाम, अपवर्ग, निर्वाण, परमगति एवं भगवत्प्राप्ति आदि संज्ञाओं द्वारा परिभाषित किया गया है। योगसूत्रकार महर्षि पतञ्जलि के अनुसार पुरुष के प्रयोजन द्वारा कार्यसम्पादन कर चुकने पर निवृत्त हुए गुणों का अपने कारण में लीन होना एवं चित्तशक्ति का अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होना कैवल्य है।[2] योगसूत्रभाष्यकार व्यास ने अविद्या का नाश हो जाने पर होने वाले बुद्धिसत्व एवं पुरुष के संयोग के अभाव को ही मोक्ष संज्ञा दी है।[3] सांख्यदर्शन में भी त्रिविधदुःखों की आत्यान्तिक एवं ऐकान्तिक निवृत्ति को ही परम पुरुषार्थ के रूप में परिभाषित किया गया है।[4] न्यायदर्शन ने निःश्रेयस की प्राप्ति के लिए तत्वज्ञान को अत्यावश्यक माना है।[5] वैशेषिकदर्शन में भी निःश्रेयस अथवा अभ्युद्य की प्राप्ति के साधन को धर्म की संज्ञा दी गई है।[6] अतः सभी दर्शन संसार को दुःख स्वरूप मानते हैं एवं दुःख को अनित्य मानते हुए इसके निरोधरूपी उपायों अथवा साधनों का अनुसंधान करते है। सभी दर्शनों के अनुसार ही दुःखों की निवृति ही चरम पुरुषार्थ अथवा कैवल्य है।

योगविषयक आत्मतत्व एवं मोक्ष

महर्षि पतञ्जलि ने संसार रूपी क्लेश से विमुक्ति के मार्ग को योग कहा है। अतः योगरूपी मार्ग से प्राप्त होने वाली विमुक्ति ही कैवल्य अथवा मोक्ष कहलाती है। आत्मा चैतन्यरूप होने के कारण जड पदार्थों से भिन्न है। योगदर्शन के अनुसार आत्मा नित्य, कूटस्थ, त्रिगुणातीत, ज्ञानस्वरूप, व्यापक, निष्क्रिय, अपरिणामी, अधिष्ठाता एवं चिन्मात्रतत्व है। अतः दृश्यमान जगत् को पुरुषार्थ रूप कहा जा सकता है।[7] सम्पूर्ण दृश्य जगत् निज–प्रयोग की सिद्धि हेतु प्रवृत्त न होकर इस चिन्मात्र पुरुष के भोग एवं मोक्ष के लिए ही है। निज सुख–दुःखादि का उपभोग भी प्रकृति के प्रयोजनार्थ ही किया जाता है। पुरुष भ्रान्तिवश स्वयं को कर्त्ता मानकर सुखप्राप्ति एवं दुःखनिवृत्ति के प्रयोजनार्थ शुभाशुभ कर्मों में प्रवृत्त होता है जिसके परिणामस्वरूप जाति, आयु एवं भोग रूपी विपाक उत्पन्न होते है। उपाधिभूत चित्त के साथ सम्पर्क होने के कारण पुरुष केवलता अथवा शुद्धता का न हो पाना ही पुरुषबन्ध कहलाता है। पुरुष की यह उपाधिरूप की शाश्वतिक निवृति ही कैवल्य कहलाती है। कैवल्य की स्थिति विशेष में त्रिविधदुःखों का भी शाश्वतिक नाश हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार तीनों गुणों से अतीत पुरुष साक्षी के समान स्थित होने पर इन गुणों से विचलित नहीं होता। पुरुष को इस तथ्य का ज्ञान हो जाता है कि गुण ही गुणों में व्यवहार करते है। अतः वह चिन्मात्र स्वरूप में स्थित रहता है। इस प्रकार आत्म–भाव में स्थित रहना, सुख–दुःख में समभाव रहना तथा समस्त कार्यों का परित्याग करना ही गुणातीत अवस्था कहलाती है।[8] पूर्वोक्त गुणातीत अवस्था विशेष को ही योगदर्शन के अन्तर्गत असम्प्रज्ञातसमाधि की संज्ञा दी गई है। सूत्रकार द्वारा वर्णन किया गया है कि चित्तवृत्तिनिरोधात्मक असम्प्रज्ञातसमाधि की अवस्था में द्रष्टा पुरुष निज चिन्मात्र स्वरूप

में प्रतिष्ठित रहता है।[9] एवं मोक्ष अथवा कैवल्य की अवस्था विशेष में भी चित्तशक्ति निजरूप में प्रतिष्ठित हो जाती है।[10] अतः योगदर्शन के अन्तर्गत वर्णित असम्प्रज्ञातसमाधि एवं मोक्ष की अवस्था लगभग एक सी है।

कैवल्यप्राप्ति प्रक्रिया

पतञ्जलि मुनि के अनुसार विशुद्ध विवेकज्ञान ही इस कैवल्यप्राप्ति का अन्यतम साधन है।[11] योगसूत्रभाष्यकार व्यास विवेकख्याति अथवा विवेकज्ञान के विषय में बताते हुए कहते है कि रजो एवं तमोगुण रूपी मल से रहित जब योग साधक के चित्त मे सत्वगुण मात्र निरन्तर प्रवाहित होता रहता है तब चित्त की वह स्थितिविशेष ही चित्तवैशारद्य कहलाती है।[12] इस स्थितिविशेष में स्वयं ही विवेकख्याति का उदय होता है।[13] चित्त की इस निर्मलता की स्थिति को ऋतम्भरा प्रज्ञा संज्ञा दी गई है जिससे कि पदार्थ का विशेषस्वरूप ज्ञान अथवा साक्षात्कार हो जाता है।[14] विवेकख्याति के निरन्तर अभ्यास द्वारा ही धर्ममेघसमाधि की स्थिति उत्पन्न होती है एवं साधक को सत्वगुणात्मक विवेकख्याति के प्रति भी विरक्ति अनुभव होती हैं अतः पूर्वोक्त निरोध संस्कार भी क्षीण हो जाते हैं एवं चित्त का अपने कारण सहित प्रकृति में लय हो जाता है तथा पुरुष निजस्वरुप में प्रतिष्ठित हो जाता है। पूर्वोक्त अवस्था विशेष ही मोक्ष अथवा कैवल्य कहलाती है। मोक्षप्राप्ति का सरल उपाय ईश्वर प्रणिधान है। यहाँ प्रणिधान का तात्पर्य भक्ति विशेष से है।[15] योगसूत्रभाष्यकार व्यास का कथन है कि ईश्वर प्रणिधान अथवा भक्तिविशेष के द्वारा योगसाधक असम्प्रज्ञातसमाधि के फलस्वरूप मोक्ष अथवा कैवल्य को प्राप्त करता है। योगदर्शन में चित्त को परमार्थतः बन्ध एवं मोक्ष से युक्त बताया है अतः पुरुष में बन्ध एवं मोक्ष का व्यवहार औपचारिक है विवेकज्ञान द्वारा तृप्त होने पर साधक का चित्त केवलता की स्थिति की ओर बह निकलता है। समाधि की अवस्था से पूर्व निरन्तर अभ्यास के द्वारा चित्तनिरोध होने पर ही कैवल्य रूपी मार्ग खुलता है जिसके परिणामस्वरूप चित्त पुण्यमयी विवेकधारा में बिना प्रयत्न के प्रवाहित होता रहता है।[16] विवेकज्ञान के उदय होने पर चित्त पूर्णरूप से अन्तर्मुखी हो जाता है तथा बाह्य जगत् के कार्यों अथवा विषयों में चित्त लगाना असम्भव सा हो जाता है। पतञ्जलि द्वारा कैवल्य को 'हान' संज्ञा प्रदान की गई है[17] एवं व्यास ने द्रष्टा एवं दृश्य के संयोग को हान कहा है।[18] भोजदेव के कथनानुसार मोक्षावस्था में जीवात्मा, सांसारिक अवस्था से अविद्या निमित्तिक जो सुख–दुखादि का अनुभव करता है उससे मुक्त हो जाता है तथा अपने शाश्वतिक चिद्रूप में सर्वदा के लिये प्रतिष्ठित हो जाता है।[19] व्यास के अनुसार जब रजोगुण और तमोगुण रूपी मल से रहित सत्वात्मक बुद्धि पुरुष की अन्यताख्यातिमात्र में प्रतिष्ठित और दग्धक्लेश बीज हो जाती है तब वह पुरुष की शुद्धि की समता–सी प्राप्त कर लेती है। उस समय व्यपदिष्ट भोगों का अभाव होना ही पुरुष की शुद्धि है। इस अवस्था की प्राप्ति होने पर ही कैवल्य होता है।[20]

इस प्रकार स्पष्ट है कि योगदर्शन के प्रायः सभी आचार्यो ने पुरुषार्थ से शून्य हुए गुणों का अपने कारण में लीन हो जाना अथवा चित्तशक्ति का अपने स्वरूप में अवस्थित हो जाने को ही कैवल्य या मोक्ष की संज्ञा दी है। योगदर्शन के सभी सिद्धान्तों एवं विचारधाराओं का अन्तिम लक्ष्य कैवल्य या मोक्ष की प्राप्ति ही है।

संदर्भ सूची

1. संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० 304।
2. योगसूत्र, 4/34।
3. व्यासभाष्य, पृ० 231।
4. त्रिविध दुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः। सांख्यदर्शन 1/1।
5. तत्वज्ञानान्निः श्रेयसाधिगमः। न्यायदर्शन, 1/1/1।
6. तयोभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः। वैशेषिकदर्शन 1/1/1।
7. योगसूत्र, 2/21।
8. श्रीमद्भगवद्गीता, 14/23–25।
9. तदाद्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्। योगसूत्र 1/3।
10. पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चित्तशक्तिरिति। योगसूत्र, 4/34।
11. वही, 2/26।

12. व्यासभाष्य, पृ० 125।
13. वही, पृ० 126।
14. वही, पृ० 127।
15. प्रणिधानाद्भक्तिविशेषात्। योगसूत्र 1/23 का व्यासभाष्य
16. तत्रवैराग्येण विषयस्रोतः खिलीक्रियते, विवेकदर्शनाभ्यासेन विवेकस्रोतः उद्भाट्यत इत्युभयाधीनश्चित्तवृत्तिरोधः। व्यासभाष्य, पृ० 46।
17. योगसूत्र 2/25।
18. व्यासभाष्य, पृ० 231।
19. राजमार्तण्डवृत्ति, पृ० 214।
20. योगसूत्र–3/55 का व्यासभाष्य।